AGRON 112 Farming based Livelihood Systems 3 (2+1)

Status of agriculture in India and different states, Income of farmers and rural people in India, Livelihood-Definition, concept and livelihood pattern in urban and rural areas, Different indicators to study livelihood systems. Agricultural livelihood systems (ALS): Meaning, approach, approaches and framework, Definition of farming systems and farming based livelihood systems. Prevalent Farming systems in India contributing to livelihood.

भारत में कृषि की स्थिति और विभिन्न राज्यों में कृषि

भारत में कृषि की वर्तमान स्थिति

कृषि भारत के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में कार्य करता है। यह रोजगार प्रदान करने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और आर्थिक विकास में योगदान देने में अहम भूमिका निभाता है। अपनी महत्ता के बावजूद, यह क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जबकि इसमें विकास और बदलाव के क्षेत्र भी नजर आते हैं। 2024 की स्थिति के अनुसार, यह विश्लेषण भारत में कृषि की प्रमुख विशेषताओं, चुनौतियों, सरकारी हस्तक्षेपों और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालता है।

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का प्रमुख योगदान है, जो 2021 के अनुसार लगभग 48.9% कार्यबल को रोजगार प्रदान करता है और 2020-2021 में देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 18.8% का योगदान करता है। हालांकि, औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों के बढ़ते प्रभाव के कारण दशकों में GDP में इसका योगदान घटा है, लेकिन कृषि खाद्य सुरक्षा, आजीविका और ग्रामीण भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना के लिए बेहद जरूरी बनी हुई है। भारत धान, गेहूं, गन्ना, फल और मसालों जैसी फसलों का शीर्ष वैश्विक उत्पादक है। इसके साथ ही, इस क्षेत्र में आधुनिकता, टिकाऊ खेती और नीति सुधारों पर बढ़ता ध्यान देखा गया है।

1. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान

- **सकल घरेलू उत्पाद (GDP):** कृषि और संबद्ध क्षेत्र जैसे वानिकी और मत्स्य पालन ने हाल के वर्षों में भारत के GDP में लगभग 18-20% का योगदान दिया है। यद्यपि अन्य क्षेत्रों जैसे सेवा और उद्योग के विकास के कारण यह हिस्सा घटा है, फिर भी कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी हुई है।
- **रोजगार:** भारत के लगभग 48.9% कार्यबल कृषि में कार्यरत हैं, जो लाखों लोगों की आजीविका का प्राथमिक स्रोत है। हालांकि, शहरीकरण और बेहतर अवसरों के कारण कृषि से गैर-कृषि क्षेत्रों में श्रम का स्थानांतरण हो रहा है।
- **निर्यात:** भारत कृषि उत्पादों का विश्व में एक प्रमुख उत्पादक और निर्यातक है। प्रमुख निर्यात वस्तुओं में चावल, गेहूं, मसाले, चाय, कॉफी, कपास, चीनी, और फल जैसे आम और केले शामिल हैं। कृषि निर्यात विदेशी मुद्रा को बढ़ाने और व्यापार संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. भूमि उपयोग और फसल पैटर्न

- **भूमि क्षेत्र:** भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 328 मिलियन हेक्टेयर है, जिसमें से लगभग 141 मिलियन हेक्टेयर पर खेती की जाती है। हालांकि, भूमि क्षरण, मिट्टी का कटाव और शहरीकरण जैसे मुद्दे कृषि योग्य भूमि को प्रभावित कर रहे हैं।

- **फसल पैटर्न:** भारतीय कृषि प्रणाली विविधतापूर्ण है और यह क्षेत्रीय जलवायु और मिट्टी की परिस्थितियों पर आधारित विभिन्न फसल चक्रों से संचालित होती है:
    - **खरीफ फसलें:** मानसून के मौसम (जून से अक्टूबर) में उगाई जाती हैं। प्रमुख फसलें हैं धान, मक्का, कपास, और दालें।
    - **रबी फसलें:** सर्दियों के मौसम (अक्टूबर से मार्च) में बोई जाती हैं। इसमें गेहूं, जौ, सरसों, और मटर प्रमुख हैं।
    - **जायद फसलें:** रबी और खरीफ के बीच (अप्रैल से जून) में उगाई जाती हैं। प्रमुख फसलें हैं तरबूज, खीरा, और सब्जियां।

AGRI CULTURAL LAND-USE STATISTICS in India (2021-22)

I	Total geographical area	:	328.74 million ha
II	Total reporting area (1 to 5)	:	306.49 million ha
1	Area under forest	:	72.00 million ha (23.49%)
2	Area not available for cultivation (A+B)	:	44.09 million ha
(A)	Area under non-agricultural uses	:	27.58 million ha (9%)
(B)	Barren & un-culturable land	:	16.52 million ha (5.39%)
3	Other uncultivated land excluding fallow land (A+B+C)	:	25.21 million ha
(A)	Permanent pasture & other grazing land %	:	10.28 million ha (3.35%)
(B)	Land under miscellaneous tree crops & groves not included in net area sown %	:	3.01 million ha (0.98%)
(C)	Culturable Waste Land	:	11.92 million ha (3.89%)
4	Fallow Lands (A+B)	:	24.17 million ha
(A)	Fallow Lands other than Current Fallows %	:	10.92 million ha (4.32%)
(B)	Current Fallows	:	13.26 million ha
5	Net sown area	:	141.01 million ha (46.01%)
6	Gross cropped area	:	219.16 million ha
7	Area sown more than once	:	78.15 million ha
III	Net irrigated area	:	77.92 million ha
IV	Gross irrigated area	:	120.38 million ha
	Cropping intensity	:	155.40%

3. Food grain Production Scenario (2023-24):

- ✓ Total food grain production in the country for the year 2023-24 – 332.30 Million Tonnes (MT)

Food grains Production for the year 2023-24 (Final Estimates):

Food grain production includes Cereals and Pulses only	
Total Cereals Production	**308.05 MillionTonnes (MT)**
Total Pulses Production	**24.25 MT**
Total Food grain Production	**332.30 MT**

Cereals	Production (Million Tonnes)
Rice	**137.82**
Wheat	**113.29**
Maize	**37.67**
Bajra	**10.72**
Jowar	**4.73**
Barley	**1.69**
Nutri cereals	**17.57**
Small Millets	**0.45**
Ragi	**1.67**
Nutri/Coarse cereals	**56.94**
Total Cereals Production	**308.05 MT**
Pulses	
Gram/Bengal gram/Chickpea	**11.03 MT**
Tur /Red gram/Arhar	**3.42 MT**
Urad/Black gram	**2.32 MT**
Green gram/Moong	**3.10 MT**
Lentil	**1.79 MT**
Other Pulses	**2.58 MT**
Total Pulses Production	**24.25 MT**
Total food grain Production (Kharif- 155.76 MT Rabi - 160.00 MT Summer -16.52 MT)	**332.30 MT**

4. कृषि में तकनीकी अपनाना

• **यंत्रीकरण:** भारत में कृषि यंत्रीकरण धीरे-धीरे बढ़ रहा है, विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और अन्य कृषि उपकरणों का उपयोग बढ़ा है। हालांकि, छोटे और सीमांत किसान, जो भारत के कुल किसानों का लगभग 86% हैं, उच्च लागत के कारण उन्नत मशीनरी का उपयोग नहीं कर पाते।

• **सिंचाई:** भारत में लगभग 50% नेट बुवाई क्षेत्र अभी भी वर्षा पर निर्भर है, जिससे कृषि मानसून पर अत्यधिक निर्भर हो जाती है। बाकी क्षेत्र नहरों, ट्यूबवेल और अन्य साधनों के माध्यम से सिंचित होता है। सरकार पानी के बेहतर उपयोग के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसे सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों को बढ़ावा दे रही है।

• **डिजिटल कृषि:** डिजिटल उपकरणों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, जैसे कि मौसम की जानकारी, मिट्टी परीक्षण, कीट नियंत्रण और बाजार मूल्य अपडेट के लिए मोबाइल ऐप। "डिजिटल कृषि मिशन" जैसी पहलें तकनीक, डेटा और विश्लेषण को कृषि में एकीकृत करने का प्रयास कर रही हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में कृषि परिदृश्य

भारत के विभिन्न राज्यों में कृषि

भारत की कृषि विविध और अत्यधिक क्षेत्रीय है, क्योंकि विभिन्न राज्यों में जलवायु परिस्थितियाँ, मृदा प्रकार और फसल पैटर्न भिन्न होते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख कृषि राज्यों में कृषि का अवलोकन है:

1. पंजाब

• **फसलें:** पंजाब को "भारत का अन्नकोठी" कहा जाता है, यह गेहूं और चावल का प्रमुख उत्पादक है, जो हरित क्रांति के माध्यम से भारत की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

• **सिंचाई:** पंजाब भारत में सबसे अधिक सिंचाई वाले राज्यों में से एक है, जहाँ 97% से अधिक भूमि सिंचाई के तहत आती है।

• **चुनौतियाँ:** मृदा का गिरना, भूजल का अत्यधिक दोहन, और गेहूं तथा चावल की एकल फसलें राज्य के लिए स्थिरता संबंधी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न करती हैं।

2. हरियाणा

• **फसलें:** हरियाणा भी एक हरित क्रांति की सफलता की कहानी है, यह गेहूं, चावल, गन्ना और कपास का प्रमुख उत्पादक है।

• **पशुपालन:** हरियाणा दूध उत्पादन में भी अग्रणी है और यह अपनी मुर्रा भैंसों के लिए प्रसिद्ध है।

• **चुनौतियाँ:** भूजल का दोहन और पराली जलाना मुख्य समस्याएँ हैं जिन्हें स्थिर कृषि के लिए समाधान करना जरूरी है।

3. उत्तर प्रदेश

• **फसलें:** उत्तर प्रदेश चीनी, गेहूं, आलू और दालों का सबसे बड़ा उत्पादक है।

• **सिंचाई:** राज्य में एक सुविकसित नहर प्रणाली है, जिसमें इसके अधिकांश कृषि भूमि सिंचाई के तहत आती है।

• **चुनौतियाँ:** उत्तर प्रदेश भूमि के विखंडन, कम यंत्रीकरण दर और जल की गुणवत्ता में गिरावट जैसी समस्याओं का सामना करता है।

4. महाराष्ट्र

• **फसलें:** महाराष्ट्र कपास, गन्ना, अंगूर और सोयाबीन का प्रमुख उत्पादक है। राज्य बागवानी में भी अग्रणी है, विशेष रूप से फल उत्पादन (आम, संत्रा)।

• **सिंचाई:** लगभग 20% कृषि भूमि सिंचाई के तहत है। राज्य वर्षा आधारित कृषि पर अत्यधिक निर्भर है, जिससे सूखा की स्थिति में यह संवेदनशील होता है।

• **चुनौतियाँ:** बार-बार सूखा, किसान आत्महत्या और अपर्याप्त जल प्रबंधन जैसी समस्याएँ चल रही हैं।

5. पश्चिम बंगाल

• **फसलें:** पश्चिम बंगाल चावल, जूट, आलू और चाय का प्रमुख उत्पादक है। राज्य भारत की बागवानी और मत्स्य पालन क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

• **सिंचाई:** राज्य में मजबूत सिंचाई प्रणाली है, जिसमें लगभग 54% कृषि भूमि सिंचाई के तहत है।

• **चुनौतियाँ:** मानसून के मौसम में बाढ़ और पुरानी कृषि तकनीकें स्थिर कृषि विकास के लिए बड़ी बाधाएँ हैं।

6. मध्य प्रदेश

• **फसलें:** मध्य प्रदेश को "भारत का सोयाबीन राज्य" कहा जाता है, यह सोयाबीन और दालों का प्रमुख उत्पादक है। यह गेहूं और तेलहन उत्पादन में भी महत्वपूर्ण राज्य है।

• **सिंचाई:** लगभग 41% कृषि भूमि सिंचाई के तहत है।

• **चुनौतियाँ:** मध्य प्रदेश कृषि उत्पादकता में कमी और कई क्षेत्रों में अपर्याप्त सिंचाई बुनियादी ढांचे जैसी समस्याओं का सामना करता है।

7. गुजरात

• **फसलें:** गुजरात कपास, मूँगफली, बाजरा और गन्ना का प्रमुख उत्पादक है। यह बागवानी (आम, प्याज) और पशुपालन में भी प्रसिद्ध है।

• **सिंचाई:** गुजरात की लगभग 46% कृषि भूमि सिंचाई के तहत है।

• **चुनौतियाँ:** राज्य सूखा और जल संकट के प्रति संवेदनशील है, विशेष रूप से कच्छ और सौराष्ट्र के शुष्क क्षेत्रों में।

8. तमिलनाडु

• **फसलें:** तमिलनाडु चावल, गन्ना, बाजरा, कपास और दालें उगाता है। राज्य बागवानी और पुष्प खेती में भी उत्कृष्ट है।

• **सिंचाई:** लगभग 58% कृषि भूमि सिंचाई के तहत है, जो इसके सुविकसित टैंक सिंचाई प्रणालियों के कारण संभव है।

• **चुनौतियाँ:** तमिलनाडु पानी की कमी, पड़ोसी राज्यों के साथ जल वितरण पर संघर्ष और तटीय क्षेत्रों में मृदा का लवणीयकरण जैसी समस्याओं का सामना करता है।

9. राजस्थान

• **फसलें:** राजस्थान बाजरा, दालें, मक्का और मूँगफली का प्रमुख उत्पादक है। यह मवेशी पालन, विशेष रूप से भेड़ और बकरियों के लिए भी अग्रणी है।

• **सिंचाई:** केवल लगभग 38% कृषि भूमि सिंचाई के तहत है, जिससे यह वर्षा पर अत्यधिक निर्भर है।

• **चुनौतियाँ:** सूखा, मरुस्थलीकरण और पानी की कमी जैसी समस्याएँ राजस्थान में कृषि को प्रभावित करती हैं।

भारत में किसानों और ग्रामीण लोगों की आय

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि आधारित है, जहाँ देश की 65% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियाँ ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका का प्रमुख स्रोत हैं। हालांकि, कृषि राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 16-17% का योगदान करती है, लेकिन किसानों और ग्रामीण परिवारों की आय कम और असमान रूप से वितरित रहती है। ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जैसे कृषि उत्पादकता, गैर-कृषि रोजगार के अवसर, सरकारी नीतियाँ, बुनियादी ढाँचा और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ।

भारत में किसानों और ग्रामीण आय का अवलोकन

1. कृषि का ग्रामीण आय में योगदान

- **कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियाँ:** कृषि ग्रामीण परिवारों की आय का प्रमुख स्रोत है और यह कुल ग्रामीण आय का लगभग 60-70% हिस्सा बनाती है। इसमें फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन, मुर्गीपालन, मत्स्य पालन और वानिकी जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।
- **गैर-कृषि आय:** ग्रामीण आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गैर-कृषि गतिविधियों से आता है, जैसे छोटे उद्योग, निर्माण कार्य, खुदरा व्यापार और सेवाएँ। विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार, लगभग 35-40% ग्रामीण आय गैर-कृषि स्रोतों से प्राप्त होती है, जो ग्रामीण आजीविका के बढ़ते विविधीकरण को दर्शाती है।

2. किसानों की औसत आय

- **राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) डेटा:** NSSO और अन्य सर्वेक्षणों के अनुसार, भारत में एक किसान परिवार की औसत मासिक आय ₹10,000-₹12,000 (लगभग $120-$145) है। इसमें कृषि और गैर-कृषि दोनों स्रोतों से प्राप्त आय शामिल है।

- **कृषि जनगणना डेटा (2021-22):** कृषि जनगणना के अनुसार, एक किसान परिवार की औसत वार्षिक आय ₹1.2 लाख से ₹1.5 लाख (लगभग $1,450-$1,800) के बीच होती है। हालाँकि, यह क्षेत्र, भूमि जोत का आकार, उगाई जाने वाली फसलों के प्रकार और बाजार तक पहुँच के आधार पर काफी भिन्न होती है।

आय के प्रमुख स्रोत:

1. **खेती (फसल उत्पादन):** कुल आय का लगभग 37% खेती से आता है, लेकिन यह मौसमी बदलावों और बाजार मूल्य पर निर्भर करता है।
2. **पशुपालन:** कुल आय का लगभग 15-20% पशुपालन से आता है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसान डेयरी, मुर्गीपालन और बकरी पालन जैसी गतिविधियों पर निर्भर रहते हैं।
3. **मजदूरी:** गैर-कृषि मजदूरी जैसे अन्य खेतों पर काम, निर्माण कार्य और अन्य श्रम कार्य कुल ग्रामीण आय का 35% हिस्सा बनाते हैं।
4. **गैर-कृषि गतिविधियाँ:** छोटे व्यापार, खुदरा व्यापार, परिवहन, हस्तशिल्प और सेवाओं से ग्रामीण परिवारों को 20-25% आय प्राप्त होती है।

3. क्षेत्रीय असमानताएँ

- **अधिक आय वाले राज्य:** पंजाब, हरियाणा और केरल जैसे राज्यों के किसान उच्च आय प्राप्त करते हैं। बेहतर सिंचाई, उच्च उत्पादकता और विविध कृषि इनकी आय को बढ़ाते हैं। उदाहरण के लिए, पंजाब में एक किसान परिवार की औसत मासिक आय ₹16,000 (लगभग $190) से अधिक है।
- **कम आय वाले राज्य:** ओडिशा, बिहार और झारखंड जैसे वर्षा आधारित और पिछड़े राज्यों के किसानों की आय ₹8,000 प्रति माह (लगभग $95) से कम होती है। ये राज्य पारंपरिक खेती पर अधिक निर्भर हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील हैं।

4. भूमि जोत के आधार पर आय वितरण

- **छोटे और सीमांत किसान (2 हेक्टेयर से कम भूमि):** ये कुल किसानों का लगभग 86% हैं, लेकिन केवल 47% भूमि पर खेती करते हैं। इनकी मासिक आय अक्सर गरीबी रेखा से नीचे होती है।
- **मध्यम और बड़े किसान (4 हेक्टेयर से अधिक भूमि):** ये किसानों का केवल 5% हैं, लेकिन 30% से अधिक भूमि पर खेती करते हैं, जिससे इनकी आय अधिक होती है।

गैर-कृषि आय के स्रोत

1. ग्रामीण रोजगार योजनाएँ:

- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA):** यह योजना ग्रामीण परिवारों को 100 दिनों का गारंटीकृत रोजगार प्रदान करती है। यह विशेष रूप से कृषि के निर्जन मौसम में आय का एक अतिरिक्त स्रोत बनती है।
- **प्रभाव:** MGNREGA ने ग्रामीण आय में 20-25% की वृद्धि की है, विशेष रूप से सूखा प्रभावित और वर्षा आधारित क्षेत्रों में।

2. स्वरोजगार और सूक्ष्म उद्यम:

- **कुटीर उद्योग:** ग्रामीण परिवार हस्तशिल्प, बुनाई, कुम्हारगिरी और खाद्य प्रसंस्करण जैसे छोटे उद्योगों में लगे रहते हैं।

- **सूक्ष्म वित्त और स्वयं सहायता समूह (SHG):** ये समूह महिलाओं के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देते हैं। छोटे ऋण प्रदान करके डेयरी, सिलाई और किराना दुकान जैसे व्यवसायों को स्थापित करने में मदद करते हैं।

3. पशुपालन और डेयरी:

- **डेयरी और पशुपालन:** डेयरी, मुर्गीपालन और बकरी पालन ग्रामीण आय के पूरक स्रोत हैं। गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब जैसे राज्यों में डेयरी क्षेत्र ने आय में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **एकीकृत खेती प्रणाली (IFS):** कई किसान फसल उत्पादन के साथ पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी को जोड़कर अपनी आय के स्रोतों में विविधता लाते हैं और जोखिम कम करते हैं।

किसानों की आय को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

1. कृषि उत्पादकता

- **कम उत्पादकता:** भारत की कृषि उत्पादकता वैश्विक मानकों की तुलना में कम है। इसका कारण है भूमि जोतों का विभाजन, पारंपरिक खेती के तरीके, और तकनीकी उपयोग की कमी।
- **मानसून पर निर्भरता:**भारत की लगभग 52% कृषि भूमि वर्षा आधारित है, जिससे किसान मानसून पर अत्यधिक निर्भर रहते हैं। यह फसल उत्पादन में अस्थिरता पैदा करता है, जिससे आय में उतार-चढ़ाव होता है।
- **मृदा क्षरण और जल की कमी:**रासायनिक उर्वरकों के अधिक उपयोग और जल प्रबंधन की खराब प्रथाओं से मृदा की गुणवत्ता खराब हो रही है और भूजल की कमी हो रही है, जो फसल उत्पादन को प्रभावित करती है।

2. भूमि जोत का आकार

- **छोटे और सीमांत किसान:**कृषि जनगणना के अनुसार, भारत के 85% से अधिक किसान छोटे और सीमांत श्रेणी में आते हैं, जिनकी भूमि जोत 2 हेक्टेयर (5 एकड़) से कम है। इन किसानों को ऋण, तकनीक, और बाजार तक सीमित पहुँच होती है, जिससे उनकी उत्पादकता और आय कम हो जाती है।
- **मध्यम और बड़े किसान:** 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि वाले किसान बेहतर आय अर्जित करते हैं क्योंकि उनके पास बड़े पैमाने पर उत्पादन, उन्नत इनपुट का उपयोग, और तकनीक एवं सिंचाई में निवेश की क्षमता होती है।
- **भूमि जोत का औसत आकार:** भारत में औसत भूमि जोत का आकार लगभग 1.08 हेक्टेयर है, जो यंत्रीकरण, इनपुट के कुशल उपयोग और उत्पादकता को सीमित करता है। छोटी जोतों पर प्रति इकाई उत्पादन लागत अधिक होती है, जिससे लाभप्रदता घट जाती है।

3. फसल का चयन और विविधीकरण

- **मूल्यवान फसलें:**फलों, सब्जियों, और मसालों जैसी उच्च-मूल्य वाली फसलें उगाने वाले किसानों की आय चावल और गेहूँ जैसी अनाज फसलों की खेती करने वालों की तुलना में अधिक होती है।
- **फसल विविधीकरण:**जिन क्षेत्रों में किसान नकदी फसलें, बागवानी, और डेयरी व पोल्ट्री जैसी सहायक गतिविधियों को अपनाते हैं, वहाँ आय का स्तर अधिक होता है।

4. सिंचाई सुविधाएँ

- **सिंचित बनाम वर्षा आधारित क्षेत्र:**पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे सिंचित क्षेत्रों में किसानों की उत्पादकता और आय अधिक होती है क्योंकि जल आपूर्ति सुनिश्चित होती है। इसके विपरीत, महाराष्ट्र,

मध्य प्रदेश और राजस्थान के वर्षा आधारित क्षेत्रों में मानसून की अनिश्चितता के कारण आय अस्थिर रहती है।

5. सरकारी नीतियाँ और सहायता

- **न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP):**गेहूँ, चावल और दलहन जैसी फसलों के लिए MSP किसानों को सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि, दूरस्थ क्षेत्रों में जहाँ सरकारी खरीद की संरचना कमजोर है, वहाँ सभी किसानों को इसका लाभ नहीं मिलता।
- **प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT):**प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) जैसी योजनाएँ छोटे और सीमांत किसानों को प्रति वर्ष □ 6,000की सीधी आय सहायता प्रदान करती हैं।
- **सब्सिडी:**
  सरकार उर्वरक, बीज, सिंचाई उपकरण, और बिजली पर सब्सिडी प्रदान करती है, जिससे खेती की लागत कम होती है और लाभप्रदता बढ़ती है।

6. बाजार तक पहुँच और मूल्य में अस्थिरता

- **बाजार संपर्क:**किसान अक्सर बिचौलियों पर निर्भर रहते हैं, जो लाभ का एक बड़ा हिस्सा लेते हैं और किसानों को कम रिटर्न मिलता है।
- **मूल्य अस्थिरता:**प्रभावी मूल्य निर्धारण तंत्र और भंडारण सुविधाओं की कमी के कारण, विशेष रूप से जल्दी खराब होने वाले उत्पादों (जैसे फल और सब्जियाँ) के लिए मूल्य में भारी उतार-चढ़ाव होता है।
- **न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP):**सरकार द्वारा घोषित MSP का लाभ केवल कुछ किसानों को मिलता है, विशेष रूप से उन राज्यों में जहाँ बाजार ढाँचा कमजोर है।

7. ऋण और वित्तीय सेवाओं तक सीमित पहुँच

- **औपचारिक ऋण:**पर्याप्त संपार्श्विक, खराब क्रेडिट इतिहास, और जटिल बैंकिंग प्रक्रियाओं के कारण कई किसानों को औपचारिक ऋण तक पहुँच नहीं मिलती। इससे वे अनौपचारिक स्रोतों, जैसे साहूकारों पर निर्भर रहते हैं, जो उच्च ब्याज दर वसूलते हैं।
- **बीमा कवरेज:**प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) जैसी फसल बीमा योजनाएँ कई छोटे किसानों तक नहीं पहुँच पाई हैं। इसका कारण जागरूकता की कमी और जटिल दावा प्रक्रिया है।

8. आय में विविधता की कमी

- **कृषि पर निर्भरता:**ग्रामीण परिवार अक्सर केवल कृषि पर निर्भर रहते हैं। मत्स्य पालन, पोल्ट्री, और कृषि आधारित छोटे उद्योगों जैसी सहायक गतिविधियों में सीमित विविधता के कारण आय वृद्धि बाधित होती है।
- **गैर-कृषि रोजगार के अवसरों की कमी:**ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि रोजगार के अवसर सीमित हैं, जिससे अधिरोजगार (Underemployment) और शहरी क्षेत्रों की मौसमी प्रवास की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

किसानों और ग्रामीण आय को बढ़ाने के लिए सरकारी पहल

1. किसानों की आय 2022-23 तक दोगुनी करने का लक्ष्य

सरकार ने 2022-23 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लिए एक मिशन शुरू किया। इसमें निम्नलिखित रणनीतियाँ शामिल हैं:

- **उत्पादकता में वृद्धि:**बेहतर बीज, उर्वरक, सिंचाई, और तकनीक के माध्यम से।
- **आय स्रोतों का विविधीकरण:**बागवानी, मछली पालन, और पशुपालन को प्रोत्साहित करके।
- **इनपुट लागत में कमी:**मृदा स्वास्थ्य कार्ड, जैविक खेती, और कुशल जल उपयोग के माध्यम से।
- **बाजार तक बेहतर पहुँच:**ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) प्लेटफॉर्म और किसान उत्पादक संगठन (FPOs) के माध्यम से।
- **जोखिम प्रबंधन:**फसल बीमा और ऋण योजनाओं के माध्यम से।

2. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN)

- 2019 में शुरू की गई यह योजना छोटे और सीमांत किसानों को कृषि खर्च और घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष □ 6,000की सीधी आय सहायता प्रदान करती है।

3. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)

- यह योजना ग्रामीण परिवारों को कम से कम 100 दिनों का गारंटीकृत मजदूरी रोजगार प्रदान करती है, जिससे कृषि मंदी के मौसम में किसानों के घरों को पूरक आय मिलती है।

4. किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) का प्रचार

- सरकार 2024 तक 10,000 नए FPOs के गठन को बढ़ावा दे रही है। यह किसानों की सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाता है, इनपुट लागत को कम करता है, और छोटे किसानों के लिए बाजार की पहुँच में सुधार करता है।

5. दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM)

- यह योजना स्वयं सहायता समूहों (SHGs), कौशल विकास, और ऋण तक पहुँच के माध्यम से ग्रामीण गरीबों की आजीविका में सुधार करने का प्रयास करती है। यह ग्रामीण परिवारों को सूक्ष्म उद्यम और अन्य आय सृजन गतिविधियों में शामिल होने में सक्षम बनाती है।

6. आत्मनिर्भर भारत पैकेज और कृषि सुधार

- **कृषि अवसंरचना कोष:** □ 1लाख करोड़ का कोष बनाया गया है, जिसका उपयोग गोदाम, कोल्ड चेन, और प्रसंस्करण इकाइयों जैसे फार्म-गेट अवसंरचना के विकास के लिए किया जाएगा।
- **किसान रेल और कृषि उड़ान:** ये पहल जल्दी खराब होने वाले कृषि उत्पादों के लिए लॉजिस्टिक्स में सुधार और परिवहन समय को कम करने का प्रयास करती हैं।

7. डिजिटल कृषि और तकनीक का उपयोग

- **स्मार्ट खेती:** ड्रोन, सेंसर, और एआई-आधारित समाधानों जैसी डिजिटल तकनीकों का उपयोग फसल प्रबंधन को बेहतर बनाने, इनपुट लागत को कम करने, और उत्पादकता बढ़ाने के लिए किया जा रहा है।
- **किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) योजना:** यह योजना कृषि और संबंधित गतिविधियों के लिए किसानों को कम ब्याज दर पर आसानी से और समय पर ऋण प्रदान करती है।

आजीविका: परिभाषा और अवधारणा

आजीविका की परिभाषा

आजीविका का अर्थ है वे साधन जिनके माध्यम से व्यक्ति या परिवार अपने जीवन-यापन की आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास और वस्त्र को प्राप्त करता है। यह आय, संसाधनों और रणनीतियों के संयोजन के माध्यम से संभव होता है। सरल शब्दों में, आजीविका उन गतिविधियों, परिसंपत्तियों और पहुँच का सम्मिलित स्वरूप है जो लोगों के जीवन-यापन के तरीके को निर्धारित करते हैं।

आजीविका के सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली परिभाषा रॉबर्ट चैंबर्स और गॉर्डन कॉनवे द्वारा दी गई है: "आजीविका उन क्षमताओं, परिसंपत्तियों (भौतिक और सामाजिक संसाधनों सहित), और गतिविधियों का समूह है जो जीवन-यापन के लिए आवश्यक हैं। एक आजीविका तभी टिकाऊ होती है जब वह तनावों और झटकों से निपट सके, अपनी क्षमताओं और परिसंपत्तियों को बनाए रख सके या उनमें सुधार कर सके, और साथ ही प्राकृतिक संसाधन आधार को क्षति पहुँचाए बिना वर्तमान और भविष्य दोनों में अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सके।"

आजीविका की अवधारणा

आजीविका की अवधारणा उन साधनों और गतिविधियों को संदर्भित करती है जिनके माध्यम से व्यक्ति या परिवार अपनी जीवन-यापन की आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास, वस्त्र, और अन्य बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इसमें वे संसाधन शामिल होते हैं जिनका उपयोग लोग करते हैं, वे रणनीतियाँ जिनका वे पालन करते हैं, और उनके आर्थिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय संदर्भ में उपलब्ध अवसर।

आजीविका केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें उन परिसंपत्तियों, कौशलों और सामाजिक नेटवर्क का व्यापक सेट शामिल है जिन पर लोग निर्भर करते हैं। ये परिसंपत्तियाँ भौतिक (जैसे भूमि, श्रम और वित्तीय संसाधन) और अमूर्त (जैसे ज्ञान, कौशल और सामाजिक संबंध) दोनों हो सकती हैं।

आजीविका को अक्सर एक प्रणाली के रूप में समझा जाता है, जिसमें लोग विभिन्न संसाधनों और गतिविधियों को मिलाकर अपनी आजीविका का समर्थन करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, खेती, मछली पालन, और पशुपालन आम आजीविका गतिविधियाँ हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में सेवाओं, व्यापार, और उद्योग में रोजगार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। लोग इन संसाधनों का उपयोग अपनी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करते हैं, जैसे आय सुरक्षित करना, स्वास्थ्य सुधारना, या सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करना।

आजीविका की स्थिरता और सुरक्षा

आजीविका की स्थिरता इसका एक महत्वपूर्ण पहलू है। एक टिकाऊ आजीविका वह है जो वर्तमान में लोगों या समुदायों की जरूरतों को पूरा करती है और भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना ऐसा करती है। इसके लिए प्राकृतिक, आर्थिक, और सामाजिक संसाधनों के उपयोग में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण पर्यावरण का क्षरण हो सकता है, जिससे लंबी अवधि में आजीविका प्रभावित हो सकती है।

इसी प्रकार, आर्थिक या सामाजिक स्थिरता भी आजीविका बनाए रखने के लिए आवश्यक है, क्योंकि बाहरी झटके जैसे आर्थिक संकट, प्राकृतिक आपदाएँ, या राजनीतिक अस्थिरता आजीविका को बाधित कर सकते हैं और लोगों की भलाई को खतरे में डाल सकते हैं।

जोखिम और भेद्यता

आजीविका की अवधारणा जोखिम और भेद्यता से भी जुड़ी हुई है। लोगों की आजीविका अक्सर आर्थिक बदलावों, जलवायु परिवर्तन, या संघर्ष जैसे आंतरिक और बाहरी कारकों के कारण जोखिम में होती है। आजीविका दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह समझना है कि व्यक्ति या समुदाय इन जोखिमों के खिलाफ कैसे लचीलापन विकसित कर सकते हैं। यह आय स्रोतों को विविध बनाने, अनुकूल रणनीतियाँ विकसित करने, या संसाधनों तक पहुँच में सुधार करने के माध्यम से हो सकता है।

जीविका अवधारणा के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

संपत्तियाँ: भौतिक और अमूर्त संसाधन जिन तक व्यक्तियों या घरों की पहुँच होती है। इसमें भूमि, पशुधन, नकद, कौशल, सामाजिक नेटवर्क और शिक्षा शामिल हो सकते हैं।

गतिविधियाँ: वे विशिष्ट क्रियाएँ जो व्यक्तियाँ या घर अपने आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करते हैं, जैसे कृषि, व्यापार, श्रमिक कार्य, या उद्योगों में काम करना।

क्षमताएँ: व्यक्तियों या घरों की यह क्षमता कि वे अपने संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें ताकि आय उत्पन्न कर सकें और अपनी जीविका सुरक्षित कर सकें। इसमें ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य और सेवाओं तक पहुँच शामिल हो सकती है।

आजीविका के मुख्य घटक

1. **संसाधनों तक पहुँच:** आजीविका इस बात पर निर्भर करती है कि लोगों को कौन-कौन से संसाधन जैसे भूमि, जल, श्रम, कौशल, उपकरण, और ज्ञान उपलब्ध हैं, साथ ही सामाजिक संसाधन जैसे नेटवर्क और संबंध।
2. **आजीविका रणनीतियाँ:** इसमें वे विभिन्न तरीके शामिल हैं जिनसे लोग अपनी परिसंपत्तियों का उपयोग जीवन-यापन के लिए करते हैं, जैसे खेती, मजदूरी, छोटे व्यवसाय, और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना।
3. **भेद्यता संदर्भ:** प्राकृतिक आपदाएँ, आर्थिक बदलाव, और सामाजिक परिवर्तनों जैसे बाहरी कारक आजीविका को आकार देते हैं। ये कारक, जिन्हें भेद्यता कहा जाता है, आजीविका की स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं।
4. **स्थिरता:** एक टिकाऊ आजीविका वह है जो न केवल वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा कर सके बल्कि बाहरी झटकों का सामना कर सके और भविष्य के लिए संसाधनों के आधार को बनाए रख सके।

आजीविका प्रणालियों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न सूचकांक

आजीविका प्रणालियों को समझने के लिए विभिन्न सूचकांकों का उपयोग किया जाता है, जो आजीविका को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों, संसाधनों, गतिविधियों और बाहरी प्रभावों का मूल्यांकन करते हैं। निम्नलिखित सूचकांक आमतौर पर आजीविका प्रणालियों का अध्ययन और मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किए जाते हैं:

1. आर्थिक सूचकांक (Economic Indicators)

- **आय स्तर:** विभिन्न आजीविका गतिविधियों (खेती, मजदूरी, व्यवसाय, आदि) से अर्जित आय का स्तर आजीविका की भलाई का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

- **रोजगार के अवसर:** औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों में उपलब्ध नौकरियाँ परिवारों के जीवनयापन को प्रभावित करती हैं।
- **व्यय पैटर्न:** परिवार अपनी आय को आवश्यकताओं (भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आदि) और बचत पर कैसे खर्च करते हैं, यह आजीविका की स्थिति का संकेत देता है।
- **ऋण तक पहुंच:** परिवारों की ऋण या वित्तीय सहायता प्राप्त करने की क्षमता, जो उनकी आजीविका गतिविधियों का समर्थन करती है।

2. प्राकृतिक संसाधन सूचकांक (Natural Resource Indicators)

- **भूमि तक पहुंच:** ग्रामीण क्षेत्रों में, कृषि भूमि तक पहुंच एक प्रमुख संसाधन है जो आजीविका रणनीतियों को प्रभावित करता है।
- **जल संसाधन:** सिंचाई, पशुपालन और घरेलू उपयोग के लिए पानी की उपलब्धता और पहुंच, विशेष रूप से कृषि समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है।
- **मिट्टी की गुणवत्ता:** कृषि भूमि की उत्पादकता मिट्टी की उर्वरता पर निर्भर करती है, जो कृषि आजीविका की स्थिरता को प्रभावित करती है।
- **वन संसाधन:** जिन समुदायों की आजीविका वनों पर निर्भर करती है (लकड़ी, ईंधन, औषधीय पौधे), उनके लिए वनों तक पहुंच और इनके सतत प्रबंधन का महत्व है।

3. सामाजिक सूचकांक (Social Indicators)

- **शिक्षा स्तर:** शिक्षा और कौशल विकास लोगों को विविध और उत्पादक आजीविका गतिविधियों में शामिल होने में सक्षम बनाते हैं।
- **स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच:** स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्वास्थ्य समस्याएँ काम करने और आय अर्जित करने की क्षमता को बाधित कर सकती हैं।
- **सामाजिक नेटवर्क:** मजबूत सामाजिक संबंध, जैसे परिवार, सामुदायिक संगठन, और सहायता प्रणाली, आजीविका सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **लैंगिक संबंध:** आजीविका गतिविधियों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाएँ घर की भलाई को बहुत प्रभावित कर सकती हैं।

4. भौतिक बुनियादी ढाँचा सूचकांक (Physical Infrastructure Indicators)

- **परिवहन:** विश्वसनीय परिवहन बुनियादी ढाँचे (सड़कें, रेल) तक पहुंच, कृषि उत्पादों को बाजार तक ले जाने या रोजगार के लिए यात्रा करने की क्षमता को प्रभावित करती है।
- **आवास:** पर्याप्त आवास और स्वच्छता आजीविका की गुणवत्ता और भलाई के संकेतक हैं।
- **ऊर्जा:** ऊर्जा (बिजली, ईंधन) की उपलब्धता और सामर्थ्य घरेलू जरूरतों और व्यवसाय या कृषि संचालन जैसी उत्पादक गतिविधियों को प्रभावित करते हैं।

5. भेद्यता सूचकांक (Vulnerability Indicators)

- **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:** ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आजीविका प्रणालियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों (सूखा, बाढ़, तापमान में वृद्धि) के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं।
- **आर्थिक झटके:** आर्थिक मंदी, मुद्रास्फीति, या रोजगार की हानि जैसी स्थितियाँ आजीविका सुरक्षा को प्रभावित कर सकती हैं।

- **सामाजिक संघर्ष:** राजनीतिक अस्थिरता, संघर्ष, या सामाजिक अशांति से प्रभावित क्षेत्रों में, विशेष रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर ग्रामीण क्षेत्रों में, आजीविका बाधित हो सकती है।

6. संस्थागत सूचकांक (Institutional Indicators)

- **सरकारी योजनाओं तक पहुंच:** कृषि सब्सिडी, रोजगार गारंटी (मनरेगा), और स्वास्थ्य योजनाएँ (आयुष्मान भारत) जैसी सरकारी योजनाओं की उपलब्धता और पहुँच आजीविका का एक प्रमुख सूचक है।
- **भूमि अधिकार सुरक्षा:** ग्रामीण क्षेत्रों में, सुरक्षित भूमि स्वामित्व या किरायेदारी अधिकार आजीविका स्थिरता को काफी प्रभावित कर सकते हैं, जबकि भूमिहीनता अक्सर असुरक्षित जीवन परिस्थितियों को जन्म देती है।
- **कानूनी ढाँचा:** शहरी क्षेत्रों में, अनौपचारिक श्रमिकों और छोटे व्यवसायों की कानूनी स्थिति उनके लाभ, सुरक्षा, और विकास के अवसरों को प्रभावित करती है।

इन सभी सूचकांकों का उपयोग करके, आजीविका प्रणालियों का गहराई से मूल्यांकन किया जा सकता है। यह न केवल आजीविका की वर्तमान स्थिति को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि विकास और सहायता कार्यक्रम लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं को संबोधित कर सकें।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आजीविका के पैटर्न

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आजीविका के पैटर्न संसाधनों, बुनियादी ढांचे, आर्थिक अवसरों और सामाजिक संरचनाओं में भिन्नताओं के कारण काफी भिन्न होते हैं। इन पैटर्न को प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, रोजगार के अवसर, और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और बाजार जैसी सेवाओं तक पहुंच से प्रभावित किया जाता है। नीचे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आजीविका के पैटर्न का विस्तार से वर्णन किया गया है, जिसमें उनकी विशिष्ट विशेषताओं और चुनौतियों को रेखांकित किया गया है।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के पैटर्न

ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती है, जिसमें कृषि और संबंधित गतिविधियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती हैं। भूमि पर बढ़ते दबाव और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे के कारण ग्रामीण आजीविका में खेती के अलावा अन्य गतिविधियाँ भी शामिल हो गई हैं।

1.1 कृषि आधारित आजीविका

कृषि ग्रामीण परिवारों की प्रमुख आजीविका है, जिसमें खाद्य और नकदी फसलों, बागवानी और वृक्षारोपण फसलों की खेती शामिल है।

- **छोटे किसान:** अधिकांश ग्रामीण परिवार छोटे जोत (2 हेक्टेयर से कम) पर खेती करते हैं। इनमें मुख्य रूप से चावल, गेहूँ, दालें और सब्जियाँ उगाई जाती हैं, जो मुख्यतः आत्मनिर्भरता के लिए होती हैं, और अतिरिक्त उपज स्थानीय बाजारों में बेची जाती है।
- **नकदी फसलें:** कुछ क्षेत्रों के किसान कपास, गन्ना, चाय, कॉफी और रबर जैसी नकदी फसलें उगाते हैं, जो आय के लिए बेची जाती हैं। ये फसलें खाद्य फसलों की तुलना में अधिक लाभदायक हो सकती हैं लेकिन इनमें बाजार उतार-चढ़ाव और लागत का अधिक जोखिम होता है।

- **बागवानी और फूलों की खेती:** ग्रामीण परिवार अब बागवानी (फल, सब्जियाँ, फूल) की ओर रुख कर रहे हैं, जिनकी बाजार में उच्च मांग है। महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में बागवानी गतिविधियों में तेजी देखी जा रही है।

1.2 पशुधन आधारित आजीविका

पशुपालन ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए, आय और खाद्य सुरक्षा बढ़ाने का एक आवश्यक सहायक आजीविका कार्य है।

- **डेयरी फार्मिंग:** गुजरात, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में डेयरी फार्मिंग नियमित आय का स्रोत है। अमूल जैसे सहकारी संगठनों ने छोटे किसानों को बाजार तक पहुंच और दूध के लिए उचित मूल्य प्रदान किया है।
- **पोल्ट्री और बकरी पालन:** आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में पोल्ट्री फार्मिंग और बकरी पालन भूमि रहित और सीमांत किसानों के लिए महत्वपूर्ण आय स्रोत हैं।
- **सूअर पालन और भेड़ पालन:** मेघालय और हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी और पूर्वोत्तर राज्यों में सूअर पालन और भेड़ पालन सामान्य हैं।

1.3 मजदूरी आधारित आजीविका

- **कृषि मजदूरी:** जिन ग्रामीण परिवारों के पास भूमि नहीं है, वे बड़े खेतों में बुवाई, कटाई और सिंचाई जैसे कार्यों के लिए मजदूरी करते हैं।
- **गैर-कृषि मजदूरी:** ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि मजदूरी भी बढ़ रही है, जैसे सड़क निर्माण, खनन, और छोटे उद्योगों में काम।

1.4 गैर-कृषि गतिविधियाँ

- **हस्तशिल्प और कारीगरी:** राजस्थान, ओडिशा और गुजरात जैसे राज्यों में कई ग्रामीण समुदाय पारंपरिक हस्तशिल्प, जैसे बुनाई, मिट्टी के बर्तन, और लकड़ी के काम में लगे हुए हैं।
- **ग्रामीण पर्यटन:** केरल, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों में प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत के कारण ग्रामीण पर्यटन आय का एक उभरता हुआ स्रोत है।

1.5 रोजगार के लिए प्रवास

- **मौसमी और स्थायी प्रवास:** महाराष्ट्र और बिहार जैसे क्षेत्रों से मजदूर निर्माण कार्यों और कृषि कार्यों के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं।
- **प्रेषण:** प्रवासी अपने गांवों में परिवारों को धन भेजते हैं, जो परिवार की आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता है।

2. शहरी क्षेत्रों में आजीविका के पैटर्न

शहरी क्षेत्रों में आजीविका आर्थिक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला पर आधारित है, जिसमें औद्योगिक उत्पादन, सेवाएँ, व्यापार और वाणिज्य शामिल हैं।

2.1 औपचारिक क्षेत्र का रोजगार

- **औद्योगिक रोजगार:** मुंबई, चेन्नई और दिल्ली जैसे औद्योगिक केंद्रों में वस्त्र, ऑटोमोबाइल, और रसायन जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

- **सेवाओं का क्षेत्र:** आईटी, बैंकिंग, और स्वास्थ्य सेवाओं में रोजगार तेजी से बढ़ा है। बेंगलुरु और हैदराबाद आईटी केंद्र हैं।
- **सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियाँ:** सरकारी नौकरियाँ शहरी क्षेत्रों में स्थिर रोजगार प्रदान करती हैं।

2.2 अनौपचारिक क्षेत्र का रोजगार

- **सड़क विक्रेता:** शहरी केंद्रों में अनौपचारिक विक्रेता भोजन, कपड़े और घरेलू सामान बेचते हैं।
- **निर्माण कार्य:** शहरों में निर्माण कार्य, विशेष रूप से प्रवासी मजदूरों द्वारा किया जाता है।
- **घरेलू काम:** कई महिलाएँ घरेलू सहायिका के रूप में काम करती हैं।

2.3 स्वरोजगार और छोटे व्यवसाय

- **छोटे रिटेल स्टोर:** किराना दुकान, दर्जी की दुकान और मरम्मत सेवाएँ चलाना आम है।
- **घर आधारित व्यवसाय:** सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, और हस्तशिल्प जैसे काम शहरी महिलाओं द्वारा किया जाता है।

3. आजीविका पैटर्न की चुनौतियाँ

- **ग्रामीण क्षेत्र:** जलवायु परिवर्तन, भूमि खंडन, और सीमित रोजगार अवसर।
- **शहरी क्षेत्र:** अनौपचारिक रोजगार, शहरी गरीबी, और भीड़भाड़।

इन पैटर्न को समझकर, विकासशील नीतियाँ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आजीविका की स्थिरता और विविधता को बढ़ावा देने में मदद कर सकती हैं।

आजीविका प्रणाली का अध्ययन करने के लिए विभिन्न संकेतक

आजीविका प्रणाली वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति और परिवार अपनी बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, आश्रय और कपड़ों को पूरा करते हैं। इन प्रणालियों की स्थिरता और प्रभावशीलता को समझने और आकलन करने के लिए शोधकर्ता और नीति-निर्माता विभिन्न संकेतकों का उपयोग करते हैं। ये संकेतक आजीविका रणनीतियों की ताकत, कमजोरियां और संवेदनशीलताएं उजागर करने में मदद करते हैं और विभिन्न संदर्भों में लोगों के जीवनयापन का समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। आजीविका प्रणाली के अध्ययन के लिए उपयोग किए जाने वाले मुख्य संकेतक निम्नलिखित हैं:

1. आर्थिक संकेतक

आय स्तर

आय, आजीविका प्रणाली का एक प्रमुख आर्थिक संकेतक है। यह कृषि, मजदूरी, व्यवसाय या सेवाओं जैसी विभिन्न आजीविका गतिविधियों से होने वाली धनराशि को दर्शाता है। आय स्तरों का आकलन व्यक्तियों और परिवारों की आर्थिक भलाई और उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता को समझने में मदद करता है। समुदायों के भीतर और उनके बीच आय असमानता प्रणालीगत असमानताओं को उजागर कर सकती है जो आजीविका को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण परिवार, जिनके पास बेहतर भूमि या विविध आय स्रोतों तक पहुंच है, वे अधिकतर उन परिवारों से बेहतर स्थिति में होते हैं जो केवल निर्वाह कृषि या मौसमी मजदूरी पर निर्भर रहते हैं।

रोजगार के अवसर

रोजगार के अवसरों की उपलब्धता आजीविका पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। ग्रामीण क्षेत्रों में, कृषि, कृषि-प्रसंस्करण, और संबंधित गतिविधियों में रोजगार महत्वपूर्ण है। शहरी क्षेत्रों में, उद्योग, सेवाएं, और अनौपचारिक क्षेत्र में नौकरियां प्रमुख होती हैं। उपलब्ध रोजगार का प्रकार, गुणवत्ता, और स्थिरता आजीविका की सुरक्षा को सीधे प्रभावित करती है। उच्च बेरोजगारी या अपर्याप्त रोजगार वाले क्षेत्रों में, परिवारों के लिए स्थायी आजीविका प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

व्यय के पैटर्न

परिवार अपनी आय का कैसे उपयोग करते हैं, यह आजीविका की स्थिरता को समझने में मदद करता है। वे परिवार जो भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी आवश्यक वस्तुओं पर अधिक खर्च करते हैं, उनके पास बचत या आजीविका बढ़ाने वाली गतिविधियों में निवेश के लिए कम संसाधन हो सकते हैं।

क्रेडिट और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच

क्रेडिट और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच आजीविका की स्थिरता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। ग्रामीण क्षेत्रों में, औपचारिक बैंक और माइक्रोफाइनेंस संस्थानों तक पहुंच परिवारों को उत्पादक संपत्तियों में निवेश करने, कृषि पद्धतियों में सुधार करने और आय स्रोतों को विविध बनाने में मदद करती है।

2. प्राकृतिक संसाधन संकेतक

भूमि तक पहुंच

ग्रामीण आजीविका प्रणालियों में, विशेष रूप से कृषि समुदायों के लिए, भूमि एक महत्वपूर्ण संपत्ति है। उपजाऊ भूमि तक पहुंच सीधे खाद्य उत्पादन और आय सृजन से जुड़ी होती है। भूमि के आकार और गुणवत्ता से आजीविका गतिविधियों का दायरा निर्धारित होता है, जो परिवार के कल्याण को प्रभावित करता है। ग्रामीण भारत में भूमि स्वामित्व अक्सर असमान होता है, जिससे हाशिए पर रहने वाले समुदायों के पास खेती योग्य भूमि तक सीमित पहुंच होती है, और उनकी आजीविका के अवसर प्रभावित होते हैं। इसके अतिरिक्त, भूमि पर अधिकारों की सुरक्षा—चाहे वह स्वामित्व हो या पट्टे पर अधिकार—भूमि की उत्पादकता और स्थिरता में दीर्घकालिक निवेश को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जल संसाधन

जल संसाधनों की उपलब्धता और पहुंच कृषि और गैर-कृषि दोनों प्रकार की आजीविका के लिए महत्वपूर्ण है। ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेष रूप से खेती पर निर्भर समुदायों के लिए, फसल सिंचाई, पशुपालन, और घरेलू उपयोग के लिए पानी आवश्यक है। नदियों, झीलों, या कुओं जैसे विश्वसनीय जल स्रोतों की उपस्थिति खेती को एक स्थायी आजीविका के रूप में बढ़ावा देती है, जबकि जल की कमी ग्रामीण आजीविका के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है। जल संकट वाले क्षेत्रों में, परिवार आर्थिक झटकों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं और असुरक्षित आय स्रोतों या पलायन पर निर्भर हो सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में, स्वच्छ जल तक पहुंच घरेलू कल्याण और आजीविका सुरक्षा का एक प्रमुख संकेतक है, खासकर छोटे उद्योगों या सेवा-आधारित गतिविधियों में लगे लोगों के लिए।

मिट्टी की गुणवत्ता

खेती आधारित आजीविका में, मिट्टी की उर्वरता और गुणवत्ता स्थिरता के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। उपजाऊ मिट्टी उत्पादक कृषि पद्धतियों का समर्थन करती है, जिससे बेहतर फसल उत्पादन और अधिक आय होती है। दूसरी ओर, अत्यधिक खेती, वनों की कटाई, या अनुचित भूमि प्रबंधन के कारण मिट्टी का क्षरण कृषि उत्पादकता को गंभीर

रूप से प्रभावित कर सकता है, जिससे खेती पर निर्भर लोगों की आजीविका खतरे में पड़ जाती है। पारंपरिक खेती पद्धतियों पर निर्भर क्षेत्रों में, मिट्टी की गुणवत्ता विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता को निर्धारित करती है।

वन और सामुदायिक संसाधन

कई ग्रामीण क्षेत्रों, विशेष रूप से आदिवासी और वनों पर निर्भर समुदायों में, लकड़ी, ईंधन, और गैर-लकड़ी उत्पादों (NTFPs) जैसे वन संसाधनों तक पहुंच आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये संसाधन न केवल आय का प्रत्यक्ष स्रोत हैं, बल्कि कृषि विफलता के समय एक सुरक्षा जाल के रूप में भी कार्य करते हैं। सामुदायिक संसाधन, जैसे चरागाह भूमि या मछली पकड़ने के क्षेत्र, पशुपालकों और मछुआरों की आजीविका के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इन संसाधनों की उपलब्धता, पहुंच, और स्थायी प्रबंधन ग्रामीण समुदायों में आजीविका स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण संकेतक हैं।

3. सामाजिक संकेतक

शिक्षा का स्तर

शिक्षा व्यक्तियों और परिवारों के लिए उपलब्ध आजीविका विकल्पों को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक है। उच्च शिक्षा स्तर औपचारिक रोजगार के अवसरों तक पहुंच को बढ़ाते हैं, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, और आजीविका के विविधीकरण को सक्षम बनाते हैं। शिक्षा लोगों को कौशल प्रदान करती है, जिससे वे गैर-पारंपरिक आजीविका गतिविधियों, जैसे उद्यमिता या तकनीकी पेशों में शामिल हो सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच की कमी लोगों की कृषि से अलग आजीविका गतिविधियों में शामिल होने की क्षमता को सीमित कर सकती है, जिससे वे केवल निर्वाह स्तर की आजीविका तक सीमित रह जाते हैं। इसलिए, शिक्षा का स्तर वर्तमान और भविष्य की आजीविका सुरक्षा दोनों का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच आजीविका प्रणालियों का एक आवश्यक सामाजिक संकेतक है। बीमारी और खराब स्वास्थ्य परिवार की काम करने की क्षमता को कम कर सकते हैं, जिससे आय कमाने की क्षमता घट जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में, पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता का अर्थ है कि रोकी जा सकने वाली बीमारियां आजीविका पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकती हैं और चिकित्सा खर्चों को कवर करने के लिए परिवारों को कर्ज में धकेल सकती हैं। शहरी क्षेत्रों में, हालांकि स्वास्थ्य सेवाएं अधिक सुलभ हो सकती हैं, निजी स्वास्थ्य सेवा की लागत निम्न-आय वाले परिवारों के लिए भारी हो सकती है। इसलिए, स्वास्थ्य सेवाओं का बुनियादी ढांचा और उनकी वहनीयता आजीविका की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।

सामाजिक नेटवर्क और सामुदायिक समर्थन

सामाजिक पूंजी, या समुदायों के भीतर नेटवर्क और संबंध, आजीविका बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, मजबूत सामुदायिक संबंध और सामूहिक समर्थन प्रणाली, जैसे कृषि सहकारी समितियां या स्वयं सहायता समूह, संसाधनों, जानकारी, और आवश्यकता के समय सहायता तक पहुंच प्रदान करते हैं। ये नेटवर्क आजीविका के विविधीकरण को भी सुविधाजनक बनाते हैं, सामाजिक समर्थन प्रदान करते हैं और सामुदायिक उद्यमों में सामूहिक निवेश को बढ़ावा देते हैं। शहरी क्षेत्रों में, प्रवासियों या अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिकों के बीच अनौपचारिक नेटवर्क रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी साझा करने और परस्पर सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण हैं। इन नेटवर्कों की मजबूती आजीविका की लचीलापन का एक मूल्यवान संकेतक है।

लैंगिक संबंध

आजिविका के अवसरों को आकार देने में लिंग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कई समुदायों में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं की उत्पादक संपत्तियों, जैसे भूमि या ऋण तक पहुंच सीमित हो सकती है, और वे कुछ आजीविका गतिविधियों में भाग लेने पर सामाजिक बाधाओं का सामना कर सकती हैं। संसाधनों और निर्णय लेने की शक्ति तक पहुंच में लैंगिक असमानताएं परिवारों की समग्र भलाई को प्रभावित कर सकती हैं और टिकाऊ आजीविका बनाने की क्षमता को सीमित कर सकती हैं। लिंग समानता से संबंधित संकेतक, जैसे श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी या निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी, आजीविका प्रणालियों की समावेशिता को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

4. भौतिक अवसंरचना संकेतक

परिवहन और बाजार तक पहुंच

परिवहन अवसंरचना आजीविका का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां बाजारों से दूरी और विश्वसनीय सड़कों की कमी आय सृजन के अवसरों तक पहुंच को गंभीर रूप से सीमित कर सकती है। अच्छी परिवहन नेटवर्क वस्तुओं को बाजारों तक पहुंचाने में सुविधा प्रदान करते हैं, रोजगार के अवसरों तक पहुंच बढ़ाते हैं और लेनदेन लागत को कम करते हैं। शहरी क्षेत्रों में, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली निम्न-आय वाले श्रमिकों को नौकरियों और सेवाओं तक पहुंचने में सक्षम बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, जो आजीविका की स्थिरता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

आवास और स्वच्छता

उपयुक्त आवास और स्वच्छता सुविधाएं कल्याण और आजीविका सुरक्षा के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। शहरी क्षेत्रों में, विशेष रूप से झुग्गियों में रहने वाले निम्न-आय समूहों के लिए, खराब आवास और अपर्याप्त स्वच्छता स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं, जो उनकी काम करने और आजीविका बनाए रखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, आवास की स्थिति बुनियादी सेवाओं जैसे बिजली, पानी, और स्वच्छता तक पहुंच को दर्शा सकती है, जो जीवन स्तर और आजीविका के परिणामों में सुधार करने में योगदान करती है।

ऊर्जा तक पहुंच

ऊर्जा, विशेष रूप से बिजली तक पहुंच, आजीविका की स्थिरता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। जिन घरों को सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुंच प्राप्त है, वे छोटे व्यवसाय चलाने या आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग करने जैसी उत्पादक गतिविधियों में बेहतर तरीके से शामिल हो सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में, ऊर्जा तक पहुंच उत्पादन, सेवा वितरण, या डिजिटल-आधारित कार्य जैसे आय सृजन गतिविधियों में भाग लेने की क्षमता को प्रभावित करती है।

5. भेद्यता संकेतक

जलवायु भेद्यता

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण आजीविका की स्थिरता को प्रभावित करने वाले तेजी से महत्वपूर्ण कारक बनते जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेष रूप से कृषि पर निर्भर समुदायों में, आजीविका वर्षा के पैटर्न में बदलाव, सूखे, बाढ़ और चरम मौसम की घटनाओं के प्रति संवेदनशील है। जलवायु परिवर्तन के प्रति भेद्यता ग्रामीण आजीविका प्रणालियों की दीर्घकालिक स्थिरता को समझने के लिए एक प्रमुख संकेतक है। शहरी

क्षेत्रों में, बढ़ते तापमान, वायु प्रदूषण और पानी की कमी स्वास्थ्य, उत्पादकता और समग्र आजीविका सुरक्षा को प्रभावित करते हैं।

आर्थिक झटके

आजीविका प्रणालियां अक्सर मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, या बाजार में उतार-चढ़ाव जैसे आर्थिक झटकों के प्रति संवेदनशील होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, आर्थिक झटके फसलों की कीमतों में गिरावट या नकदी फसलों की विफलता से उत्पन्न हो सकते हैं, जबकि शहरी आजीविका प्रमुख उद्योगों में आर्थिक मंदी या नौकरी के नुकसान से प्रभावित हो सकती है। परिवारों की इन झटकों का सामना करने की क्षमता का आकलन उनकी भेद्यता और लचीलापन को समझने के लिए आवश्यक है।

कृषि आजीविका प्रणाली (ALS): अर्थ, दृष्टिकोण और दृष्टिकोण

कृषि आजीविका प्रणाली (Agricultural Livelihood Systems - ALS) से तात्पर्य कृषि प्रथाओं को ग्रामीण आजीविका के व्यापक संदर्भ में एकीकृत करने से है। यह उन विभिन्न तरीकों पर केंद्रित है जिनके माध्यम से कृषि क्षेत्र में रहने वाले परिवार अपनी आजीविका चलाते हैं, आय उत्पन्न करते हैं और संसाधनों का प्रबंधन करते हैं। इसमें फसल उत्पादन, पशुपालन, कृषि वानिकी, मत्स्य पालन और प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार उपयोग शामिल है जो ग्रामीण आजीविका को बेहतर बनाने के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता को भी सुनिश्चित करता है। यह सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, बाजार की गतिशीलता, जलवायु परिवर्तनशीलता और सरकारी नीतियों जैसे कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाले बाहरी कारकों पर भी विचार करता है।

कृषि आजीविका प्रणाली (ALS) ग्रामीण परिवारों के कृषि से संबंधित गतिविधियों के माध्यम से अपनी आजीविका सुरक्षित करने के विविध और आपस में जुड़े तरीकों को दर्शाती है। यह प्रणाली केवल खेती तक सीमित नहीं है; इसमें वे सभी गतिविधियाँ और रणनीतियाँ शामिल हैं जो परिवार कृषि से आजीविका अर्जित करने के लिए अपनाते हैं, जैसे कि फसल उत्पादन, पशुपालन, कृषि वानिकी, मत्स्य पालन और कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण। एएलएस उन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संदर्भों के साथ कृषि के अंतर्संबंधों को भी ध्यान में रखती है, जिनमें ग्रामीण लोग रहते हैं। यह आय तक सीमित नहीं है, बल्कि खाद्य सुरक्षा, सामाजिक संबंध और झटकों से निपटने की क्षमता जैसे कारकों को भी शामिल करती है।

कृषि आजीविका प्रणाली का अर्थ

कृषि आजीविका प्रणाली (ALS) बहुआयामी होती है, जिसमें विभिन्न घटक शामिल होते हैं जैसे प्राकृतिक, मानव, सामाजिक, वित्तीय और भौतिक संसाधन; गतिविधियाँ; रणनीतियाँ; और नीति, जलवायु परिवर्तन, बाजार की गतिशीलता और सांस्कृतिक प्रथाओं जैसे बाहरी कारक। "आजीविका" का मतलब न केवल आय सृजन से है, बल्कि जीवन की समग्र गुणवत्ता से भी है, जिसमें खाद्य, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक नेटवर्क तक पहुंच शामिल है। एएलएस उन महत्वपूर्ण संसाधनों जैसे भूमि, पानी, बीज और तकनीक की उपलब्धता और पहुंच द्वारा आकार लेती है, साथ ही उन संस्थागत और राजनीतिक वातावरण द्वारा जिसमें कृषि गतिविधियाँ होती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसान इन प्रणालियों पर अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने, जोखिमों का प्रबंधन करने और अपने कल्याण को बढ़ाने के लिए बहुत हद तक निर्भर करते हैं। ये प्रणालियाँ भौगोलिक परिस्थितियों, कृषि-पारिस्थितिकी स्थितियों, सांस्कृतिक मानदंडों और आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर व्यापक

रूप से भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, शुष्क भूमि क्षेत्र में एक कृषि प्रणाली बाढ़ क्षेत्र या समशीतोष्ण क्षेत्र की प्रणाली से भिन्न होगी, क्योंकि संसाधन, चुनौतियाँ और अवसर अलग-अलग होते हैं। इसलिए, एएलएस एक अनुकूलनीय दृष्टिकोण को शामिल करती है जहाँ किसान लगातार बदलती पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी प्रथाओं और रणनीतियों को समायोजित करते हैं।

एएलएस, अनिवार्य रूप से, ग्रामीण परिवारों द्वारा खाद्य, आय और संपत्ति को सुरक्षित करने के लिए अपनाई गई गतिविधियों और रणनीतियों का समग्र रूप है। ग्रामीण और कृषि समुदायों में, आजीविका अक्सर कृषि उत्पादन, चाहे वह फसल उत्पादन हो, पशुपालन हो, या अन्य कृषि-आधारित गतिविधियाँ हों, पर अत्यधिक निर्भर होती है। हालांकि, एएलएस प्रत्यक्ष कृषि गतिविधियों तक सीमित नहीं है; इसमें प्रसंस्करण, विपणन और प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन जैसी गतिविधियाँ भी शामिल हैं जो कृषि उत्पादकता को अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन प्रदान करती हैं। यह अवधारणा उन विविध और अनुकूलनशील रणनीतियों को स्वीकार करती है, जिन्हें परिवार बदलती पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक दबावों का सामना करने के लिए अपनाते हैं, जिससे एएलएस एक गतिशील और लचीली प्रणाली बन जाती है जो स्थिरता और लचीलापन पर जोर देती है।

एएलएस दृष्टिकोण (ALS Approach)

कृषि आजीविका प्रणाली (ALS) दृष्टिकोण कृषि प्रणालियों का विश्लेषण, योजना बनाने और हस्तक्षेप करने का एक तरीका है, जिसमें उन सभी गतिविधियों, रणनीतियों और संसाधनों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिनका उपयोग ग्रामीण परिवार अपनी आजीविका बनाए रखने के लिए करते हैं। यह दृष्टिकोण केवल कृषि उत्पादकता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, ग्रामीण आजीविका की भलाई, लचीलापन और स्थिरता में सुधार पर जोर देता है। एएलएस दृष्टिकोण के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

1. **आजीविका का समग्र दृष्टिकोण (Holistic View of Livelihoods):** पारंपरिक कृषि विकास दृष्टिकोण, जो केवल फसल उत्पादन या पशुपालन में सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है, के विपरीत एएलएस दृष्टिकोण व्यापक आजीविका प्रणाली को देखता है। यह उन सभी संसाधनों और गतिविधियों को ध्यान में रखता है, जो किसी परिवार के जीवन-यापन और भलाई में योगदान देते हैं, जिनमें कृषितर गतिविधियाँ जैसे मजदूरी श्रम, छोटे पैमाने का व्यापार, और प्रवासन भी शामिल हैं।
2. **स्थिरता (Sustainability):** एएलएस दृष्टिकोण लंबे समय तक प्राकृतिक संसाधनों की उत्पादन क्षमता को बनाए रखने या बढ़ाने वाले स्थायी कृषि प्रथाओं को प्राथमिकता देता है। इसमें पर्यावरणीय क्षरण को कम करने, जल संरक्षण करने, और जैव विविधता बढ़ाने वाली तकनीकों को बढ़ावा देना शामिल है। स्थायी एएलएस प्रथाएँ यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं कि भविष्य की पीढ़ियाँ भी कृषि से अपनी आजीविका प्राप्त कर सकें।
3. **लोग-केंद्रित दृष्टिकोण (People-Centered):** एएलएस दृष्टिकोण ग्रामीण किसानों और समुदायों को विकास पहल के केंद्र में रखता है। यह मानता है कि लोग अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार विविध रणनीतियाँ और प्राथमिकताएँ अपनाते हैं, और इन्हें समझना और सम्मान देना किसी भी हस्तक्षेप को डिजाइन करने में महत्वपूर्ण है। इसमें किसानों को सक्रिय एजेंट के रूप में देखा जाता है, जो अपने उपलब्ध संसाधनों और बाधाओं के आधार पर निर्णय लेते हैं, न कि केवल सहायता के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में।
4. **लचीलापन निर्माण (Resilience Building):** एएलएस दृष्टिकोण कृषि समुदायों में जलवायु परिवर्तन, आर्थिक संकट, या राजनीतिक अस्थिरता जैसे बाहरी झटकों के प्रति लचीलापन बढ़ाने की कोशिश करता

है। इसके तहत आजीविका रणनीतियों का विविधीकरण, संसाधनों तक पहुंच में सुधार, और सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करना शामिल है, ताकि परिवार व्यवधानों का बेहतर सामना कर सकें और उनसे उबर सकें।

5. **समावेशी विकास (Inclusive Development):** एएलएस दृष्टिकोण समावेशिता पर जोर देता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि महिलाएँ, छोटे किसान, आदिवासी समुदाय, और भूमिहीन मजदूर जैसे हाशिये पर मौजूद समूह निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से शामिल हों और कृषि विकास प्रयासों से समान रूप से लाभान्वित हों। यह भूमि, पानी, ऋण और बाजारों तक पहुँच में असमानताओं और शक्ति असंतुलन को दूर करने का प्रयास करता है।

कृषि आजीविका प्रणाली (ALS): ढांचा (Framework)

कृषि आजीविका प्रणाली (ALS) ढांचा कृषि के माध्यम से ग्रामीण समुदायों के जीवन-यापन को सुरक्षित करने और बनाए रखने में आकार लेने वाले विभिन्न आयामों को समझने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह ढांचा नीति निर्धारकों, शोधकर्ताओं और विकास कार्यकर्ताओं को कृषि प्रणालियों की स्थिरता, उत्पादकता और लचीलापन को प्रभावित करने वाले आपसी जुड़े हुए कारकों का विश्लेषण करने में मदद करता है। जटिल कृषि आधारित आजीविका को प्रबंधनीय घटकों में विभाजित करके, ALS ढांचा उन चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालता है, जिनका सामना किसानों को जलवायु परिवर्तन, बाजार की अस्थिरता और सामाजिक-आर्थिक गतिशीलताओं के संदर्भ में करना पड़ता है।

ALS ढांचे के घटक

ALS ढांचा कई महत्वपूर्ण घटकों पर आधारित है, जो प्रत्येक कृषि परिवारों की आजीविका के एक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये घटक सामान्यतः व्यापक रूप से पहचाने गए स्थायी आजीविका ढांचे (SLF) से प्राप्त होते हैं, लेकिन इन्हें विशेष रूप से कृषि प्रणालियों के लिए अनुकूलित किया गया है। इन घटकों में शामिल हैं:

1. **आजीविका संपत्ति (पूंजी):** ALS ढांचे का आधार उन संपत्तियों या पूंजी पर आधारित है जो ग्रामीण परिवारों के पास होती हैं और जो उनके कृषि कार्यों को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। इन संपत्तियों को सामान्यतः पाँच श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है:
    - **प्राकृतिक पूंजी (Natural Capital):** इसमें भूमि, जल, वन और जैव विविधता शामिल हैं, जो कृषि उत्पादन के लिए मूलभूत संसाधन हैं। इन प्राकृतिक संपत्तियों की उपलब्धता, गुणवत्ता और प्रबंधन सीधे कृषि प्रणालियों की उत्पादकता और स्थिरता को प्रभावित करते हैं।
    - **मानव पूंजी (Human Capital):** इसमें किसानों के कौशल, ज्ञान, स्वास्थ्य और श्रम क्षमता को शामिल किया जाता है। किसानों के बीच उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण उनके नई तकनीकों को अपनाने, उत्पादकता बढ़ाने और आय के स्रोतों को विविधतित करने की क्षमता को सुधार सकते हैं।
    - **सामाजिक पूंजी (Social Capital):** इसमें सामाजिक नेटवर्क, समुदाय संगठन, किसान सहकारी समितियाँ और संस्थाएँ शामिल हैं, जो सहायता प्रदान करती हैं, सूचना के आदान-प्रदान को सरल बनाती हैं, और बाजारों तथा संसाधनों तक पहुंच को बढ़ाती हैं। सामाजिक पूंजी अक्सर झटकों और तनावों के प्रति लचीलापन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- **आर्थिक पूंजी (Financial Capital):** इसमें कृषि और गैर-कृषि गतिविधियों से आय, बचत, ऋण और अन्य वित्तीय संसाधन शामिल हैं, जिनका उपयोग किसान कृषि इनपुट, तकनीकों और विविधीकरण के अवसरों में निवेश करने के लिए कर सकते हैं।
- **भौतिक पूंजी (Physical Capital):** इसमें कृषि उत्पादन के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचा और संपत्तियाँ शामिल हैं, जैसे सिंचाई प्रणाली, सड़कें, भंडारण सुविधाएँ, मशीनरी और संचार प्रौद्योगिकियाँ। पर्याप्त भौतिक पूंजी तक पहुंच कृषि दक्षता और बाजार पहुंच को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है।

2. संवेदनशीलता संदर्भ (Vulnerability Context): ALS फ्रेमवर्क में संवेदनशीलता संदर्भ उन बाहरी कारकों को संदर्भित करता है जो किसानों की अपनी जीविका को बनाए रखने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। ये कारक शॉक्स, प्रवृत्तियाँ, और मौसमीता (seasonality) को शामिल करते हैं:

- **शॉक्स (Shocks):** अप्रत्याशित घटनाएँ, जैसे सूखा, बाढ़, कीटों का प्रकोप, या बाजारों का गिरना, जो कृषि उत्पादन और आय सृजन को बाधित कर सकते हैं। ये शॉक्स अक्सर खाद्य असुरक्षा, संपत्तियों की हानि और ग्रामीण परिवारों की बढ़ी हुई संवेदनशीलता का कारण बनते हैं।
- **प्रवृत्तियाँ (Trends):** जनसंख्या, प्रौद्योगिकी, बाजार स्थितियों और जलवायु पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव, जो कृषि उत्पादकता और आजीविका के अवसरों को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ फसल चक्र, जल उपलब्धता और चरम मौसम घटनाओं की आवृत्ति में बदलाव कर सकती हैं।
- **मौसमीता (Seasonality):** कृषि उत्पादन, श्रम उपलब्धता, और आय सृजन की चक्रीय प्रकृति, जो पूरे वर्ष में भिन्न होती है। मौसमी भिन्नताएँ खाद्य संकट, बेरोजगारी और गैर-उत्पादन समय के दौरान वित्तीय तनाव का कारण बन सकती हैं।

3. **संरचनाओं और प्रक्रियाओं का रूपांतरण (Transforming Structures and Processes)** ALS ढांचा यह भी बताता है कि संस्थाएँ, नीतियाँ, और प्रक्रियाएँ कृषि आजीविकाओं को चलाने के लिए किस प्रकार के व्यापक पर्यावरण को आकार देती हैं। इनमें सरकारी नीतियाँ, बाजार प्रणालियाँ, भूमि स्वामित्व व्यवस्था, विस्तार सेवाएँ, और कानूनी ढाँचे शामिल हैं, जो संसाधनों और सेवाओं तक पहुँच को प्रभावित करते हैं।

- **नीतियाँ और संस्थाएँ (Policies and Institutions):** राष्ट्रीय और स्थानीय सरकारी नीतियाँ, जैसे कृषि सब्सिडी, भूमि सुधार, या ग्रामीण विकास कार्यक्रम, किसानों के लिए उपलब्ध संसाधनों और अवसरों के वितरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। इसी तरह, कृषि सहकारी समितियाँ, माइक्रोफाइनेंस संगठन, और अनुसंधान निकाय जैसी संस्थाएँ आजीविका रणनीतियों का समर्थन या सीमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- **सांस्कृतिक मानदंड और लिंग संबंध (Cultural Norms and Gender Dynamics):** सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड, जिसमें लिंग संबंध शामिल हैं, गहरे रूप से प्रभावित करते हैं कि किसे आजीविका संपत्तियों तक पहुँच है, कौन संसाधनों पर नियंत्रण करता है, और कौन निर्णय-निर्माण में भाग लेता है। लिंग-संवेदनशील दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि महिलाएँ, जो अक्सर कृषि में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं, कृषि विकास पहलों से समान रूप से लाभान्वित हों।

- **बाजार पहुंच और मूल्य श्रृंखलाएँ (Market Access and Value Chains):** ALS ढांचा किसानों के लिए बाजारों तक पहुँच की महत्वता को उजागर करता है, जिसमें इनपुट और आउटपुट दोनों प्रकार के बाजार शामिल हैं। प्रभावी मूल्य श्रृंखलाएँ, बाजार सूचना प्रणालियाँ और परिवहन अवसंरचना तक पहुँच यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं कि किसान अपनी उपज को उचित कीमतों पर बेच सकें, आवश्यक इनपुट खरीद सकें, और विश्वसनीय आय उत्पन्न कर सकें।

4. जीविका रणनीतियाँ (Livelihood Strategies): कृषि गृहस्थियाँ अपनी संपत्तियों, बाहरी संदर्भ (शॉक्स, प्रवृत्तियाँ, और मौसमीता), और संस्थागत एवं नीति पर्यावरण के आधार पर विभिन्न जीविका रणनीतियाँ अपनाती हैं। ये रणनीतियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

- **फार्म-आधारित गतिविधियाँ (On-Farm Activities):** ये गतिविधियाँ मुख्य रूप से फसलों और मवेशियों के उत्पादन पर केंद्रित होती हैं। किसान बाजार की स्थिति, संसाधनों की उपलब्धता, और अपने परिवार की आवश्यकताओं के आधार पर नकद फसलों, खाद्य फसलों या दोनों का मिश्रण चुन सकते हैं। फसल विविधीकरण, कृषि वानिकी, और एकीकृत कृषि प्रणालियाँ ऐसी फार्म-आधारित रणनीतियाँ हैं जो लचीलापन बढ़ाती हैं।
- **फार्म-बाहर की गतिविधियाँ (Off-Farm Activities):** कई ग्रामीण गृहस्थियाँ अपनी कृषि आय को पूरक करने के लिए फार्म-बाहर की गतिविधियों में संलग्न होती हैं। इनमें मजदूरी, छोटे पैमाने पर व्यापार, या डेयरी उत्पादन, खाद्य संरक्षण, और हस्तशिल्प जैसी मूल्य-संवर्धित प्रसंस्करण गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं।
- **प्रवासन (Migration):** कुछ गृहस्थियाँ अपनी जीविका रणनीतियों को विविधित करने के लिए परिवार के सदस्यों को शहरी क्षेत्रों या विदेशों में रोजगार की तलाश में भेजती हैं। इन प्रवासियों से मिलने वाली भेजी गई रकम (रेमिटेंस) अक्सर गृहस्थी की कृषि गतिविधियों का समर्थन करने या कम कृषि उत्पादन के समय वित्तीय स्थिरता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

5. जीविका परिणाम (Livelihood Outcomes): ALS फ्रेमवर्क का उद्देश्य स्थायी जीविका परिणाम प्राप्त करना है, जिन्हें कई आयामों में मापने की कोशिश की जाती है:

- **आय और जीविका सुरक्षा में सुधार (Improved Income and Livelihood Security):** कृषि और गैर-कृषि गतिविधियों से बढ़ी हुई आय, जो वित्तीय स्थिरता और शॉक्स से लचीलापन में सुधार लाती है।
- **आहार सुरक्षा (Food Security):** गृहस्थियाँ पूरे वर्ष अपनी पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त भोजन उत्पन्न या खरीदने में सक्षम होती हैं, जिससे स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार होता है।
- **पर्यावरणीय स्थिरता (Environmental Sustainability):** कृषि प्रथाएँ जो मिट्टी, पानी, और जैव विविधता का संरक्षण करती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कृषि के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन भविष्य पीढ़ियों के लिए संरक्षित रहें।
- **सामाजिक समानता (Social Equity):** यह सुनिश्चित करना कि समुदाय के सभी सदस्य, जिनमें महिलाओं और आदिवासी लोगों जैसे हाशिए पर मौजूद समूह भी शामिल हैं, संसाधनों, निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं और जीविका अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त करें।

- **शॉक्स और तनावों के प्रति लचीलापन (Resilience to Shocks and Stresses):** कृषि गृहस्थियों की क्षमता का निर्माण करना ताकि वे शॉक्स, जैसे प्राकृतिक आपदाएँ या बाजार उतार-चढ़ाव से निपट सकें और अपनी जीविका आधार को न खोएं।

कृषि प्रणालियों की परिभाषा

कृषि प्रणाली एक प्रकार की कृषि गतिविधियों का समूह है जिसे इस तरह से व्यवस्थित और प्रबंधित किया जाता है कि उपलब्ध संसाधनों—भूमि, श्रम, पूंजी और इनपुट्स—का कुशलतापूर्वक उपयोग सुनिश्चित किया जा सके, ताकि एक परिवार या समुदाय की खाद्य, आय और अन्य आजीविका आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें। कृषि प्रणालियाँ कृषि-जलवायु परिस्थितियों, सामाजिक-आर्थिक कारकों और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर बहुत भिन्न होती हैं।

कृषि प्रणालियाँ आमतौर पर प्रमुख गतिविधियों या विभिन्न घटकों के संयोजन के आधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत की जाती हैं। कृषि प्रणालियों के सामान्य प्रकारों में शामिल हैं:

• **निर्वाह कृषि (Subsistence Farming):** ऐसी कृषि जिसमें परिवार मुख्य रूप से अपनी खपत के लिए खाद्य उत्पादन करते हैं, और बाजार में बेचने के लिए बहुत कम अधिशेष होता है। यह उस क्षेत्र में सामान्य है जहाँ भूमि का आकार छोटा होता है और आधुनिक इनपुट्स या प्रौद्योगिकियों तक सीमित पहुँच होती है।

• **व्यावसायिक कृषि (Commercial Farming):** ऐसी कृषि जिसमें स्थानीय, क्षेत्रीय या अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बिक्री के लिए फसलें और मवेशी उत्पादित किए जाते हैं। यह प्रणाली बेहतर अवसंरचना और बाजार पहुंच वाले क्षेत्रों में प्रचलित होती है, जैसे कपास, गन्ना, और चाय की नकदी फसलों की खेती।

• **मिश्रित कृषि (Mixed Farming):** फसल उत्पादन और मवेशी पालन का संयोजन, जो संसाधन उपयोग क्षमता को बढ़ाता है और आय स्रोतों का विविधीकरण करके जोखिम को कम करता है।

• **एग्रोफॉरेस्ट्री (Agroforestry):** एक ही भूमि पर वृक्षों और झाड़ियों को फसलों और मवेशियों के साथ एकीकृत करना, जो जैव विविधता, मृदा की उर्वरता और आर्थिक लाभों में सुधार करता है।

कृषि-आधारित आजीविका प्रणालियाँ

- कृषि-आधारित आजीविका प्रणालियाँ उस व्यापक ढांचे को संदर्भित करती हैं जिसमें कृषि गतिविधियों को अकेले नहीं देखा जाता, बल्कि इसे एक विविध आजीविका रणनीति के रूप में देखा जाता है, जिसमें कृषि और गैर- कृषि तत्व दोनों शामिल होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, परिवार अक्सर कई आय स्रोतों पर निर्भर होते हैं जो पारंपरिक कृषि प्रथाओं के साथ मेल खाते हैं।

  कृषि-आधारित आजीविका प्रणालियाँ, जहाँ कृषि मुख्य गतिविधि होती है, में अतिरिक्त उपक्रम जैसे डेयरी फार्मिंग, पोल्ट्री, मछली पालन या कृषि प्रसंस्करण को आय सुरक्षा बढ़ाने और फसल विफलता या बाजार के उतार-चढ़ाव जैसे शॉक्स के प्रति संवेदनशीलता को कम करने के लिए एकीकृत किया जा सकता है। कृषि-आधारित आजीविका प्रणालियों के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

- **फसल और मवेशी एकीकरण (Crop and Livestock Integration):** फसल उत्पादन के साथ मवेशी पालन का एकीकरण परिवारों को संसाधनों का बेहतर उपयोग करने की अनुमति देता है। मवेशी फसलों के लिए खाद प्रदान करते हैं, जबकि फसलें मवेशियों के लिए चारा प्रदान करती हैं। यह प्रणाली विभिन्न गतिविधियों में जोखिम को फैलाती भी है।

- **कृषि प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन (Agro-Processing and Value Addition):** परिवार आय बढ़ाने और बाजारों तक पहुँच बेहतर बनाने के लिए खाद्य फसलों (जैसे आटा या तेल बनाना) या डेयरी उत्पादों (जैसे पनीर, घी) के प्रसंस्करण जैसी मूल्य संवर्धन गतिविधियों में संलग्न होते हैं।
- **सतत संसाधन प्रबंधन (Sustainable Resource Management):** कृषि-आधारित आजीविका प्रणालियाँ अधिक से अधिक सतत प्रथाओं को अपनाती हैं, जैसे जैविक खेती, संरक्षण कृषि और जल-प्रभावी सिंचाई प्रणालियाँ, ताकि प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा की जा सके और दीर्घकालिक उत्पादकता बढ़ाई जा सके।
- **बाजार पहुँच और कड़ियाँ (Market Access and Linkages):** लाभकारी कीमतों पर कृषि उत्पाद बेचने की क्षमता, बाजारों तक पहुँच और मूल्य श्रृंखलाओं में भागीदारी कृषि-आधारित आजीविका प्रणालियों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। बाजारों तक पहुँच सुनिश्चित करना किसानों को उनकी आय में सुधार करने और उत्पादकता बढ़ाने वाली प्रौद्योगिकियों में निवेश करने में मदद करता है।

1. चावल-गेहूं कृषि प्रणाली

चावल-गेहूं कृषि प्रणाली भारत के उत्तरी हिस्सों में, विशेषकर पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में एक प्रमुख प्रणाली है। यह सिंचाई पर अत्यधिक निर्भर होती है और इसमें खरीफ (मानसून) मौसम के दौरान चावल की खेती की जाती है, उसके बाद रबी (सर्दी) मौसम में गेहूं की खेती की जाती है।

मुख्य विशेषताएँ:

• **गहन सिंचाई:** चावल की खेती के पानी-गहन स्वभाव के कारण इस प्रणाली में व्यापक सिंचाई पर निर्भरता होती है।

• **उच्च उत्पादक किस्में (HYVs):** चावल और गेहूं दोनों को अक्सर उच्च उत्पादक किस्मों का उपयोग करके उगाया जाता है, ताकि उत्पादकता बढ़ाई जा सके।

• **यांत्रिकीकरण:** इस प्रणाली में यांत्रिकीकरण, जिसमें ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर्स और थ्रेशर्स का उपयोग शामिल है, पंजाब और हरियाणा में विशेष रूप से सामान्य है।

• **इनपुट-गहन:** फसल की उपज बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और हर्बीसाइड्स का उच्च मात्रा में उपयोग किया जाता है, जिससे समय के साथ मृदा की गिरावट हो सकती है।

आजीविका में योगदान:

आय सृजन: यह प्रणाली उत्तरी भारत के किसानों के लिए आय का मुख्य स्रोत है, क्योंकि चावल और गेहूं दोनों प्रमुख खाद्य फसलें हैं जिनकी बाजार में उच्च मांग होती है।

खाद्य सुरक्षा: चावल और गेहूं प्रमुख खाद्य फसलें हैं, जो न केवल किसान परिवारों के लिए बल्कि पूरे देश के लिए खाद्य सुरक्षा में योगदान करती हैं।

रोजगार: यह प्रणाली कृषि, प्रसंस्करण, परिवहन और विपणन क्षेत्रों में रोजगार उत्पन्न करती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

2. चावल-मछली कृषि प्रणाली

पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम और केरल जैसे क्षेत्रों में, जहां जल की उपलब्धता अधिक होती है और भूमि मौसमी बाढ़ की अधिक प्रवृत्त होती है, किसान चावल-मछली कृषि प्रणाली का अभ्यास करते हैं। इस प्रणाली में धान की खेती के साथ मछली पालन किया जाता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **एकीकृत चावल और मछली पालन:** मछलियाँ बाढ़ से भरे धान के खेतों में उगाई जाती हैं, जो समान जल संसाधनों का उपयोग करती हैं।
- **पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण:** मछली का मल-जल एक प्राकृतिक उर्वरक के रूप में कार्य करता है, जो मृदा की उर्वरता बढ़ाता है और रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता को कम करता है।
- **रोग नियंत्रण:** मछलियाँ कीड़े और घास को खाती हैं, जो धान के खेतों में कीटों और खरपतवारों को नियंत्रित करने में मदद करती हैं।

आजीविका में योगदान:

- **आय विविधीकरण:** यह प्रणाली मछली से अतिरिक्त आय प्रदान करती है, जिससे कृषि आय में विविधता आती है और एकल फसल पर निर्भरता कम होती है।
- **पोषण सुरक्षा:** मछली प्रोटीन का समृद्ध स्रोत प्रदान करती है, जो घरों की पोषण स्थिति में सुधार करती है।
- **सततता:** रासायनिक इनपुट को कम करके और प्राकृतिक कीट नियंत्रण को बढ़ावा देकर, यह प्रणाली सतत कृषि प्रथाओं को समर्थन देती है।

2. **डेयरी-आधारित कृषि प्रणाली**

डेयरी-आधारित कृषि प्रणाली भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है, विशेषकर उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में। कई छोटे किसान फसल उत्पादन के साथ-साथ डेयरी farming को मिलाकर अपनी आय के कई स्रोतों को सुरक्षित करते हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

• **पशु पालन एकीकरण:** किसान दूध उत्पादन के लिए मवेशी और भैंसें पालते हैं, जो नियमित नकद प्रवाह प्रदान करती हैं।

• **फसल अवशेषों का उपयोग:** गेहूं के भूसे और चावल के भूसे जैसे फसल अवशेषों का चारा के रूप में उपयोग किया जाता है, जिससे अपव्यय कम होता है और चारा लागत कम होती है।

• **दूध सहकारी समितियाँ:** कई क्षेत्रों में स्थिर बाजार और दूध वितरण के लिए सहायक बुनियादी ढाँचा प्रदान करने वाली स्थापित डेयरी सहकारी समितियाँ हैं।

आजीविका में योगदान:

• **स्थिर आय:** दूध की बिक्री से नियमित आय प्राप्त होती है, जो किसानों को फसल विफलता से वित्तीय रूप से सुरक्षित रखती है।

• **रोजगार:** डेयरी farming ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान करती है, जैसे मवेशी पालन, दूध प्रसंस्करण और विपणन।

• **मृदा उर्वरता:** पशु मल-जल का उपयोग जैविक उर्वरक के रूप में किया जाता है, जिससे मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है।

4. बागवानी-आधारित कृषि प्रणाली

यह प्रणाली उन क्षेत्रों में सामान्य है जहां फल, सब्जियां, फूल और मसाले उगाने के लिए उपयुक्त जलवायु होती है, जैसे महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु और जम्मू और कश्मीर। बागवानी-आधारित कृषि प्रणाली में उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे सेब, अंगूर, टमाटर, प्याज और मसालों की खेती शामिल है।

मुख्य विशेषताएँ:

• **उच्च मूल्य वाली फसलें:** फल और सब्जियां प्रमुख फसलों की तुलना में अधिक आर्थिक मूल्य रखती हैं, जिससे आय की अधिक संभावना मिलती है।

• **जल और तापमान संवेदनशीलता:** कई बागवानी फसलों के लिए विशिष्ट जलवायु परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं, इसलिए किसान नियंत्रित पर्यावरण कृषि पद्धतियों को भी अपनाते हैं।

• **बाजार संपर्क:** बाजारों के पास होना और ठंडी भंडारण सुविधाओं तक पहुंच आवश्यक होती है, ताकि बाद की फसल हानि को कम किया जा सके।

आजीविका में योगदान:

• **लाभप्रदता में वृद्धि:** बागवानी फसलें निवेश पर उच्च रिटर्न प्रदान करती हैं, जो किसान की आय में महत्वपूर्ण वृद्धि करती हैं।

• **रोजगार:** यह प्रणाली चुनने, पैकिंग, प्रसंस्करण और परिवहन जैसी गतिविधियों में रोजगार उत्पन्न करती है।

• **निर्यात अवसर:** कई बागवानी फसलें, जैसे आम, अंगूर और मसाले, निर्यात की जाती हैं, जो अंतरराष्ट्रीय बाजारों से आय प्रदान करती हैं।

5. कृषि-वृक्षारोपण आधारित कृषि प्रणाली

कृषि-वृक्षारोपण प्रणाली में एक ही भूमि पर पेड़, फसलें और/या मवेशी शामिल होते हैं, जो मृदा उर्वरता में सुधार, सूक्ष्म जलवायु विनियमन और आय विविधीकरण जैसी लाभ प्रदान करते हैं। यह कर्नाटका, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में लोकप्रिय है।

मुख्य विशेषताएँ:

• **पेड़-फसल संबंध:** पेड़ फसलों के बीच लगाए जाते हैं, जो छांव, मृदा उर्वरता और हवा से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

• **विविध उत्पादन:** कृषि-वृक्षारोपण लकड़ी, ईंधन लकड़ी, चारा, फल और औषधीय पौधे प्रदान करता है।

• **जलवायु लचीलापन:** पेड़ अत्यधिक मौसम के प्रति लचीलापन बढ़ाते हैं, पानी को संरक्षित करते हैं और मृदा संरचना में सुधार करते हैं।

आजीविका में योगदान:

• **संसाधन विविधीकरण:** किसान लकड़ी और गैर-लकड़ी वन उत्पादों सहित कई स्रोतों से आय प्राप्त करते हैं, जिससे एकल फसल पर निर्भरता कम होती है।

• **पर्यावरणीय लाभ:** पेड़ कार्बन अवशोषित करते हैं, मृदा अपरदन से बचाव करते हैं और जैव विविधता में योगदान करते हैं, जो दीर्घकालिक स्थिरता का समर्थन करता है।

• **पोषण सुरक्षा:** कई कृषि-वृक्षारोपण प्रणालियाँ ऐसे फल और औषधीय पौधे शामिल करती हैं, जो घरों की पोषण स्थिति को बढ़ाते हैं।

6. शिफ्टिंग खेती (झूम खेती)

झूम खेती, जिसे शिफ्टिंग खेती के नाम से भी जाना जाता है, पूर्वोत्तर राज्यों के आदिवासी समुदायों द्वारा प्रचलित एक पारंपरिक प्रणाली है, जिसमें असम, मेघालय और मिजोरम शामिल हैं। इस पारंपरिक प्रणाली में वन क्षेत्र को साफ कर कुछ वर्षों तक खेती की जाती है, फिर उसे पुनः उत्पन्न होने के लिए छोड़ दिया जाता है।

मुख्य विशेषताएँ:

• **पर्याय कृषि:** खेतों का चक्रीय उपयोग किया जाता है, बीच में मृदा के पुनः उर्वरक होने के लिए खाली किया जाता है।

• **जैव विविधता:** किसान एक ही खेत में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं, जो जैव विविधता और कीट प्रतिरोध को बढ़ावा देती हैं।

• **कम इनपुट:** इस प्रणाली में रासायनिक उर्वरक या कीटनाशकों जैसे बाहरी इनपुट का न्यूनतम उपयोग होता है।

आजीविका में योगदान:

• **स्वतंत्रता:** शिफ्टिंग खेती आदिवासी समुदायों को जीविकोपार्जन प्रदान करती है, जिससे खाद्य सुरक्षा में योगदान मिलता है।

• **सांस्कृतिक महत्व:** यह प्रणाली स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं और पारंपरिक ज्ञान से गहरे जुड़े हुए हैं।

• **पोषण विविधता:** यह प्रणाली विभिन्न प्रकार की फसलें उगाकर आहार विविधता को बढ़ावा देती है, जिसमें सब्जियाँ, दालें और अनाज शामिल होते हैं।

7. वर्षा आधारित कृषि प्रणाली

वर्षा आधारित कृषि उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ वर्षा कम या परिवर्तनीय होती है, जैसे राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में। इन क्षेत्रों के किसान फसल उत्पादन के लिए मानसून की वर्षा पर निर्भर होते हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

• **कम जल इनपुट:** किसान अक्सर सूखा सहनशील फसलें, जैसे बाजरा, ज्वार, और दालें उगाते हैं, जिन्हें न्यूनतम जल की आवश्यकता होती है।

• **मृदा और जल संरक्षण:** मृदा की नमी बनाए रखने के लिए मल्चिंग, कंठूर बंडींग और वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकें महत्वपूर्ण हैं।

• **लचीली फसल किस्में:** किसान पारंपरिक फसल किस्मों का उपयोग कर सकते हैं जो सूखा और अत्यधिक तापमान के प्रति अधिक लचीली होती हैं।

आजीविका में योगदान:

• **खाद्य सुरक्षा:** वर्षा आधारित कृषि उन कई ग्रामीण परिवारों को बनाए रखती है, जिनके पास सिंचाई की सुविधा नहीं होती, जिससे खाद्य उपलब्धता में योगदान मिलता है।

• **आय में स्थिरता:** जबकि आय सिंचित प्रणालियों से कम होती है, सूखा सहनशील फसलें सूखा सीजन के दौरान कुछ स्थिरता सुनिश्चित करती हैं।

• **सतत प्रथाएँ:** मृदा और जल संरक्षण की तकनीकें पर्यावरणीय स्थिरता का समर्थन करती हैं और जलवायु परिवर्तन के जोखिमों को कम करती हैं।

8. मिश्रित कृषि प्रणाली

मिश्रित कृषि भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है, जिसमें एक ही खेत पर फसल उत्पादन और मवेशी पालन को संयोजित किया जाता है ताकि संसाधनों के उपयोग में दक्षता बढ़े और आय में विविधता आए।

मुख्य विशेषताएँ:

फसल-मवेशी एकीकरण: फसल अवशेषों को मवेशियों के चारे के रूप में उपयोग किया जाता है, और मवेशियों की खाद का उपयोग फसलों को उर्वरित करने के लिए किया जाता है।

जोखिम विविधीकरण: केवल फसलों पर निर्भर न होने के कारण, किसान फसल विफलता से बेहतर तरीके से बचाव करते हैं।

कई आय स्रोत: फसल बिक्री और मवेशी उत्पाद (जैसे दूध, अंडे या मांस) दोनों खेती की आय में योगदान करते हैं।

आजीविका में योगदान:

आय में विविधीकरण: मिश्रित कृषि कई आय स्रोत प्रदान करती है, जिससे वित्तीय सुरक्षा बढ़ती है।

पोषण सुरक्षा: मवेशी उत्पाद उच्च गुणवत्ता वाले पोषण प्रदान करते हैं, जिससे ग्रामीण घरों में आहार विविधता में सुधार होता है।

मृदा स्वास्थ्य: पशुओं की खाद मृदा की उर्वरता में योगदान करती है, जिससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है।